जोगीदास

ये प्रतापगढ़ राज्य के महारावत हरिसिंह के आश्रित कवि जाति के चारण थे। इनके रचे हरिपिंगल-प्रबन्ध नामक एक बहुत उच्च कोटि के ग्रन्थ का पता हाल ही में लगा है। यह सं. 1721 में लिखा गया था। रचना काल का दोहा यह है—

संवत सतर इकवीस में, कातिक सुभ पख चंद।
हरिपिंगल हरिअंद जस, वणियौ खीरसंमद॥

यह छंद-शास्त्र का ग्रन्थ है। इसकी भाषा डिंगल है। इसमें संस्कृत, हिन्दी और डिंगल में प्रयुक्त मुख्य-मुख्य छन्दों का लक्षण-उदाहरण सहित विवेचन है। ग्रंथ तीन परिच्छेदों में बँटा हुआ है। अंतिम परिच्छेद के अधिकांश में जोगीदास ने अपने आश्रयदाता महारावत हरिसिंह के वंशगौरव का बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है जो वास्तविक और उपादेय है। साहित्य एवं इतिहास दोनों ही दृष्टियों से यह एक बहुत उत्तम कोटि का ग्रन्थ है। भाषा रचना इस ढंग की है—

वाणी सेस उचारवा, मैं मन कीधौ पेख।
कांकीड़ा लौड़े न की, गज घूमंतौं देख॥
हणमत सहजै डाकियौ, गौ लोपै महराण।
त की न कूदै दादरौ, हत्थ-बेहत्थ प्रमाण।
राणी गज-मोताहळै, बौह मंडै सणगार।
की भीली झालै नहीं, गळ गुंजाहळ हार[8]॥

Scanned by CamScanner

हंमीर

ये रत्नू शाखा के चारण कच्छ-भुज के राजा महाराव श्री देशल जी प्रथम (सं. 1774-1808) के महाराज कुमार लखपत जी के आश्रित थे। इनका जन्म जोधपुर राज्य के पड़ोई गाँव में हुआ था। विद्या अध्ययन इनका कच्छभुज में हुआ जहाँ भाट-चारणों के लिए उन दिनों विशेष सुविधा थी। इन्होंने लखपत-पिंगल, गुण-पिंगल-प्रकास, हंमीर-नाममाला, जोतिष जड़ाव, ब्रह्माण्ड पुराण, भागवत दर्पण इत्यादि बाईस ग्रन्थ बनाए जिनमें लखपत-पिंगल इनकी सर्वोपयोगी रचना है। यह डिंगल के छन्दशास्त्र का ग्रंथ है। इसकी रचना सं. 1796 में हुई थी—

संवत सत्तर छिनुऔ पणाँ पस बरस पटंतर।
तिथि उत्तिम सातिम्म वार उत्तिम गुरु वासर॥
माह मास व्रतमान अरक बैठो उतराइणि।
सुकल पष्य रिति सिसिर महा सुभजोग सिरोमणि॥
विसतार गाह मात्रा वरण सुजि पसाउ सरसत्ती रौ।
कहियौ हमीर चित चौजि करि पिंगल गुण लखपत्ति रौ॥

लखपत पिंगल में चार प्रकरण हैं जिनमें क्रमशः वर्णिक छन्दों, मात्रिक छन्दों, गाहा छन्द के विविध भेदों और गीतों की विविध जातियों का सविस्तार वर्णन किया गया है। कुल मिलाकर 469 छंदों में ग्रंथ समाप्त हुआ है। पहले छंद का लक्षण देकर फिर उदाहरण दिया गया है जिसमें महाराज कुमार लखपत जी की प्रशंसा की गई है। भाषा-रचना इस ढंग की है—

Scanned by CamScanner

मँछाराम

ये सेवक जाति के ब्राह्मण जोधपुर नगर के निवासी थे। इनका जन्म सं.1830 में और देहान्त सं.1892 में हुआ था। इनके पिता का नाम बख्शीराम और माता का रुक्मिणी था। ये जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कृपापात्र थे। कविता करना इन्होंने जोधपुर के तत्कालीन मंत्री भंडारी अमरसिंह के पुत्र किशोरीदास से सीखा था, जैसा कि इन्होंने अपने 'रघुनाथ रूपक' के प्रारंभ से बतलाया है—

सदगुर प्रणाम किसोर सचिव अमरेस सवाई।
करै पिता जिम कृपा, तिकण गुण समझ बनाई॥

मंछाराम का लिखा अभी तक सिर्फ एक ग्रंथ, रघानाथ-रूपक, प्रकाश में आया है। कहते हैं कि इन्होंने दो-चार ग्रंथ और भी लिखे थे जो इनके वंशवालों के पास सुरक्षित है। 'रघुनाथ-रूपक' डिंगल के छंदों का ग्रन्थ है। इसकी समाप्ति सं. 1863 में हुई थी—

Scanned by CamScanner

संवत् ठारै सतक बरस तैसठौ बचाणौं।
सुकल भादवी दसम वार ससि हर बरताणौं॥

ग्रंथ नव विलासों में विभाजित है। प्रथम दो विलासों में वर्ण, गुण, दग्धाक्षर, दुगण, अक्षर-त्याग, फलाफल, वयण-सगाई, काव्य दोष, अखरोट उक्ति के लक्षण-भेद, रसों के नाम-भेद लक्षण इत्यादि का वर्णन है। शेष सात विलासों में डिंगल भाषा में प्रयुक्त 72 जाति के गीतों का लक्षण उदाहरण सहित विवेचित है। गीतों के उदाहरण में भगवान् श्री रामचन्द्र की कथा कही गई है और इसीलिए ग्रंथ का नाम रघुनाथ-रूपक रखा गया है—

इण ग्रन्थ मो रघुनाथ गुण अत भेद कविता भाखियौ।
इण हीज कारण नाम ओ रघुनाथ रूपक राखियौ॥

इसमें वर्णित श्री राम-कथा का क्रम तुलसीकृत रामायण के अनुसार रखा गया है। कहीं-कहीं अन्तर भी है पर वह नगण्य है।

रघुनाथ-रूपक बहुत उपयोगी ग्रंथ है। डिंगल भाषा-साहित्य की ज्ञान प्राप्ति के लिए इसका अध्ययन अनिवार्य है। ग्रन्थ कविता की दृष्टि से भी काफी महात्व का है। इसके विषय में उत्तमचन्द भंडारी की निम्नलिखित राय उल्लेखनीय है—

आछौ कीध इसौह, रस लै साहित-सिंधु रो।
जग सह पियण जिसौह, रूपक राम पयोध रुख॥
मनसाराम प्रबंध मझ, राखै मनसा राम॥
कियौ भलो हिज काम कवि, कियो भलो हिज काम॥

पाठाकों के विनोदार्थ 'रघुनाथ-रूपक' में से एक उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

(वरण जथा)

पावड़ियाँ सहत नरम पद-पंकज,
नपुर हाटक परम पुनीत।
छक कड़बन्ध सुचँगा छाजै
पट अंगा राजै पुण पीत॥1॥
पुणचा जड़त जड़ाऊ पुणची,
कळ आजान भुजा केयूर।
बैजंती बळ मुगत बिसाला,
प्रगट हियै माळा भरपूर॥2॥
कंडसरी ग्रीवा श्रुत कुंडळ,
चंदण निले तिलक दुत चंद।
सिर सिरपेच सुघट हीरा सद,
क्रीट मुगट सोमै सुखकंद॥3॥

Scanned by CamScanner

जळधर वरण भव भंजण,

सीता मन रंजण सज साथ।

मो मन आंण सुजांण सिरोमण,

नित इण वांण बसौ रघुनाथ ॥4 ॥

(खड़ाऊं सहित कोमल चरण-कमलों में स्वर्ण के पवित्र नूपुर हैं। कमर में श्रेष्ठ किंकिणी और शरीर पर सुन्दर पीला वस्त्र सुशोभित होता है ॥1 ॥ हाथ के पहुँचे पर जड़ाऊं पहुँची और सुन्दर आजानु भुजाओं पर भुजबन्ध शोभित है। हृदय पर बड़े-बड़े मोतियों की वैजयंती माला है ॥2 ॥ ग्रीवा में कटसरी, कानों में कुंडल (ललाट पर) मलयागिरि चंदन का द्युतिवंत तिलक और मस्तक पर अच्छे घाट के सच्चे हीरों का सिरपेंच, किरीट और मुकुट सुशोभित होता है ॥3 ॥ भक्तों के भय को नाश करनेवाले श्रेष्ठ पुरुषों के सिरमौर मेघवर्ण राम मन को प्रसन्न करनेवाली सीता के साथ हमेशा इस रूप से मेरे मन में निवास करें ॥4 ॥

Scanned by CamScanner

किशनजी

ये आढ़ा गोत्र के चारण राजस्थान के प्रसिद्ध कवि दुरसाजी की वंशपरम्परा में थे और मेवाड़ के महाराणा भीमसिंह के आश्रित थे। इनके पिता का नाम दूल्ह था, जिनके छपुत्रों में ये तीसरे थे। 'रघुवर-जस प्रकास' में इन्होंने अपना वंश-परिचय इस प्रकार दिया है—

दुरसा घर किसनेस, किसन घर सुकवि महेसर।
सुत महेस खुंमाण, खानसाहिब सुत जिण घर॥
साहिब घर पनसाह, पना सुत दूल्ह सुकव पुण।
दूल्ह घरे षट पुत्र, दान1 जस2 किसन3 बुधोमण4॥
सारुप5 चमन6 मुरधर ऊतन, घणट नगर पाँचेटियो।
चारण जात आढ़ा विगत, किसन सुकवि पिंगल कियो॥

किशजी को हिन्दी तथा संस्कृत के रीति ग्रंथों का प्रौढ़ ज्ञान था और ये डिंगल-पिंगल दोनों में कविता करने के अभ्यासी थे। इतिहास की ओर इनकी रुचि विशेष थी। इतिहास-संबंधी सामग्री को एकत्र करने के लिए जब कर्नल टॉड ने मेवाड़ में भ्रमण किया था तब ये उनके साथ थे और चारण-भाटों के घरों में पड़ी हुई बहुत सी सामग्री इन्हीं के अविश्रान्त उद्योग से कर्नल टॉड को प्राप्त हुई थी। इनकी लिखी सैकड़ों फुटकर कविताएँ तथा भीमविलास और रघुवर-जस-प्रकास नाम दो ग्रंथ प्राप्त हुए है। भीमविलास महाराणा भीमसिंह की आज्ञा से सं.1879 में लिखा गया था। इसमें उक्त महाराणा का जीवन-वृत्तान्त है। इतिहास की दृष्टि से यह ग्रंथ बहुत उपयोगी है। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण रचना रघुवर-जस-प्रकास है। इसमें डिंगल के छंदशास्त्र का विस्तृत विवेचन है। यह सं.1881 में पूरा हुआ था। इसमें हिन्दी, संस्कृत और डिंगल में प्रयुक्त प्रधान-प्रधान छंदों के लक्षण बहुत सरल भाषा में समझाए गए हैं और उदाहरणों में भगवान रामचन्द्र का यशोगान किया गया है। मात्रा, गण, प्रस्तार, वैणसगाई, काव्य-दोष आदि पर लिखी हुई इनकी व्याख्याएँ वास्तव में बहुत मौलिकता-पूर्ण और अपने रंग-ढंग की अनुपम हैं। किशन जी का एक छप्पय यहाँ उद्धत किया जाता है—

Scanned by CamScanner